॥ ओ३म् ॥

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥ सारे संसार को आर्य बनाओ ॥

दैनिक यज्ञ प्रकाश

प्राप्ति स्थान :
वैदिक प्रचार केन्द्र
सामने लाजपतनगर, चौक, लखनऊ-३

सम्पादक—स्व० पं० देवव्रत धर्मेन्दु आर्योपदेशक

प्रकाशक—सार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड
पटौदी हाउस दरियागंज नई दिल्ली-२

मुद्रक—सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज, नई दिल्ली-२

१२५ वीं बार दयानन्दाब्द १६७
वि० सम्वत् २०४८ प्रचार शुल्क ७५ पैसे

॥ ओ३म् ॥

प्रातःकाल शैय्या छोड़ने से पूर्व निम्नलिखित मन्त्रों का
उच्चारण कर परमपिता परमात्मा का ध्यान करें ।

ओं प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना ।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातस्सोममुत रुद्रं हुवेम ॥१॥
ओं प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता ।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह ॥२॥
ओं भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः ।
भग प्र णो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम ॥३॥
ओं उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम् ।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम ॥४॥
ओं भग एव भगवाँ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम ।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुर एता भवेह ॥५॥

यज्ञोपवीत धारण करने का मन्त्र

ओं यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥
ओं यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि ॥

भोजन करने से पूर्व इस मन्त्र को बोलें:—

ओं अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः ।
प्र प्र दातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥

सन्ध्या (ब्रह्म यज्ञ)

निम्नलिखित मन्त्र से परमेश्वर की प्रार्थना करके तीन बार आचमन करें :—

ओं शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभि स्रवन्तु नः ॥

सर्वव्यापक परमेश्वर मनोवांछित सुख और पूर्णानन्द की प्राप्ति के लिए हमको कल्याणकारी हो और हम पर सब ओर से सुख की वृष्टि करे ॥१॥

अथेन्द्रियस्पर्श मन्त्र

ओं वाक् वाक् । इस मन्त्र से मुख का दक्षिण और वाम पार्श्व ।

ओं प्राणः प्राणः । इससे दक्षिण और वाम नासिका के छिद्र ।

ओं चक्षुः चक्षुः । इससे दक्षिण और वाम नेत्र ।

ओं श्रोत्रम् श्रोत्रम् । इससे दक्षिण और वाम श्रोत्र ।

ओं नाभिः । इससे नाभि ।

ओं हृदयम् । इससे हृदय ।

ओं कंठः । इससे कण्ठ ।

ओं शिरः । इससे मस्तक ।

ओं बाहुभ्यां यशोबलम् । इससे दोनों भुजाओं के मूल स्कन्ध ।

ओं करतलकरपृष्ठे । इससे दोनों हाथों के ऊपर तले स्पर्श कर ।

हे अन्तर्यामिन् ! मैं प्रार्थना करता हूँ कि मैं जान बूझकर अपनी ज्ञान-कर्म इन्द्रियों से, अर्थात् वाक्, प्राण, चक्षु, श्रोत्र, हृदय, कण्ठ, शिर, बाहु, करतल और करपृष्ठ आदि से कदापि पाप न करूं, ऐसी कृपा करो ।

अब ईश्वर की प्रार्थनापूर्वक मार्जन मन्त्र लिखे जाते हैं :—

ओं भूः पुनातु शिरसि । इस मन्त्र से शिर पर ।

ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः । इस मन्त्र से दोनों नेत्रों पर ।

ओं स्वः पुनातु कण्ठे । इस मन्त्र से कण्ठ पर ।

ओं महः पुनातु हृदये । इस मन्त्र से हृदय पर ।

ओं जनः पुनातु नाभ्याम् । इस मन्त्र से नाभि पर ।

ओं तपः पुनातु पादयोः । इस मन्त्र से दोनों पगों पर ।

ओं सत्यं पुनातु पुनः शिरसि । इस मन्त्र से पुनः शिर पर ।

ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र । इस मन्त्र से सब अंगों पर जल छिड़कें ।

हे दयानिधे ! आप मेरी इन्द्रियों, अर्थात् शिर, नेत्र, कण्ठ, हृदय, नाभि, पांव आदि को पवित्र करके बलवान् और यशस्वी कीजिए ॥

प्राणायाम मन्त्र

ओं भूः । ओं भुवः । ओं स्वः । ओं महः । ओं जनः । ओं तपः । ओं सत्यम् ॥

प्राणस्वरूप, प्राणों से प्यारा, दुःख दूर करने हारा, सर्वव्यापक आनन्द-स्वरूप, सबसे बड़ा, सबका (जनक) पिता, दुष्टों को संताप-कारी, सबके जानने वाला और अविनाशी प्रभु है ।

अघमर्षण-मन्त्र

ओं ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत ।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः ॥१॥
समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत ।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥२॥
सूर्य्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् ।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः ॥३॥

परमेश्वर के अनन्त सामर्थ्य से वेद-विद्या और कार्यरूप प्रकृति उत्पन्न हुई । उसी के सामर्थ्य से प्रलय और उसी के सामर्थ्य से समुद्र उत्पन्न हुए ॥१॥

जगत् को वश में रखने वाले परमेश्वर ने अपने सहज स्वभाव से जलकोष के पीछे काल के विभाग— वर्ष, दिन और रात्रि-रचे ॥२॥

विधाता ने सूर्य, चन्द्र, द्यु लोक, पृथ्वीलोक, अन्तरिक्ष और उसमें फिरने वाले सब लोक-लोकान्तर यथापूर्व बनाए ॥३॥

पुनः 'शन्नो देवी०' मन्त्र से तीन आचमन करें।

॥ मनसा परिक्रमा मन्त्राः ॥

ओं प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षिताऽऽदित्या इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥१

हे सर्वज्ञ परमेश्वर! आप हमारे सम्मुख की ओर विद्यमान हैं, स्वतन्त्र राजा और हमारी रक्षा करने वाले हैं, आपने सूर्य को रचा है जिसकी किरणों द्वारा पृथ्वी पर जीवन आता है। आपके आधिपत्य, रक्षा और जीवन प्रदान के लिए, हे प्रभो! आपको बारम्बार नमस्कार है। जो अज्ञानवश हमसे द्वेष करता है अथवा जिससे हम द्वेष करते हैं, उसे हम आपके न्यायरूपी सामर्थ्य पर छोड़ते हैं॥१

दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।

हे परमेश्वर! आप हमारे दक्षिण की ओर व्यापक हैं। आप हमारे राजाधिराज हैं और भुजंगादि बिना हड्डी वाले जन्तुओं से हमारी रक्षा करते हैं, और ज्ञानियों के द्वारा हमें ज्ञान प्रदान करते हैं। आपके आधिपत्य……(आगे पूर्व मन्त्र के अर्थ के समान) ॥२॥

प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥३॥

हे सौन्दर्य के भण्डार! आप हमारे पृष्ठ की ओर हैं, हमारे महाराज हैं, बड़े-बड़े हड्डी वाले और विषधारी जन्तुओं से हमारी रक्षा करते हैं। आपके…(आगे पूर्ववत्) ॥३॥

उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥४॥

हे पिता! आप हमारे वाम पार्श्व में व्यापक हैं और हमारे परम ऐश्वर्ययुक्त स्वामी हैं। स्वयम्भू और हमारे रक्षक हैं, आप ही बिजली द्वारा रुधिर की गति और प्राणों की रक्षा करते हैं। आपके……(आगे पूर्ववत्)।

ओं ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥५॥

हे सर्वव्यापक प्रभो! आप हमारे नीचे की ओर के देशों में विद्यमान हैं। आप रंग वाले वृक्षों और लताओं द्वारा हमारे प्राणों की रक्षा करते हैं। आपके (आगे पूर्ववत्) ॥५॥

ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥६॥

हे महान् प्रभो! आप ऊपर के लोकों में व्यापक, पवित्रात्मा, हमारे स्वामी और रक्षक हैं। आप वर्षा करके हमारी कृषि को सींचते हैं जिससे हमारा जीवन होता है। आपके (आगे पूर्ववत्) ॥

उपस्थान मन्त्र

ओं उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥१॥
उदु त्यं जातवेदसं, देवं वहन्ति केतवः।
दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥२॥

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आ प्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा ॥

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतं अदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥४॥

हे प्रभो ! आप अज्ञान अन्धकार के परे, सुखस्वरूप, प्रलय के पश्चात् रहने वाले, दिव्य गुणों के साथ सर्वत्र विद्यमान देव और हमको जन्म देने वाले हैं, हम आपके उत्तम ज्योतिः स्वरूप को प्राप्त हों ॥१॥

हे जगदीश्वर ! आप सकल ऐश्वर्य के उत्पादक, सर्वज्ञ, जीवात्मा के प्रकाशक हैं, आपकी महिमा सबको दिखाने के लिए संसार के पदार्थ, पताका का काम करते हैं। जैसे झण्डियां मार्ग दिखलाती हैं उसी प्रकार सृष्टि-नियम सबको, परमेश्वर की प्रतीति कराते हैं ॥२

हे स्वामिन् ! इस संसार के समस्त पदार्थ आपको दर्शाते हैं। आप दिव्य पदार्थों के बल हैं। सूर्य, चन्द्र और अग्नि के चक्षु अथवा प्रकाशक हैं। भूमि, आकाश और तदन्तर्गत लोक सब आपके सामर्थ्य से हैं। आप चर-अचर जगत् के उत्पादक और अन्तर्यामी हैं। हे प्रभो ! हम सर्वत्र मन, वाणी और कर्म से सत्य का ग्रहण करें ॥३॥

हे सबके मार्गदर्शक ! आप अनादि काल से विद्वानों और संसार के हितार्थ शुद्ध वर्तमान हैं। प्रभो ! हम आपका ज्ञान सौ वर्ष सुनें, आपके नाम का सौ वर्ष व्याख्यान करें, सौ वर्ष की आयु भर पराधीन न हों और यदि योगाभ्यास से सौ वर्ष से भी अधिक आयु हो तो इसी प्रकार विचरें ॥४॥

गायत्री मन्त्र

ओम् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ।

हे प्राणस्वरूप दुःखहर्ता, सर्वव्यापक आनन्द के देने वाले प्रभो ! आप सर्वज्ञ और सकल जगत् के उत्पादक हैं । हम आपके उस पूजनीय पापनाशक स्वरूप तेज का ध्यान करते हैं जो हमारी बुद्धियों को प्रकाशित करता है । हे पिता ! आप से हमारी बुद्धि कदापि विमुख न हो । आप हमारी बुद्धियों में सदैव प्रकाशित रहें और हमारी बुद्धियों को सत्कर्मों में प्रेरित करें, ऐसी प्रार्थना है ।

अथ समर्पण

हे ईश्वर दयानिधे ! भवत्कृपयाऽनेन जपोपासनादिकर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः ।।

हे परमेश्वर दयानिधे ! आपकी कृपा से जपोपासनादि कर्मों को करके हम धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि को शीघ्र प्राप्त होंवे ।

नमस्कार मन्त्र

ओम् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च । नमः शिवाय च शिवतराय च ।।

जो सुख स्वरूप संसार के उत्तम सुखों का देने वाला, कल्याणकारी मोक्षस्वरूप, धर्म-युक्त कार्यों का ही करने वाला, अपने भक्तों को सुख का देने वाला और धर्म कार्यों में युक्त करने वाला, अत्यन्त मंगलस्वरूप एवं धार्मिक मनुष्यों को मोक्षसुख देने हारा है उसको हमारा बारम्बार नमस्कार हो ।

सामान्य नित्य यज्ञ पद्धति

प्रथम निम्नलिखित मन्त्रों से तीन वार आचमन करें ।

ओं अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ।।१।। इससे पहला

ओं अमृतापिधानमसि स्वाहा ।।२।। इससे दूसरा

ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ।।३।। इससे तीसरा

निम्नलिखित मन्त्रों से जल लेकर अंग स्पर्श करें

ओं वाङ्म आस्येऽस्तु ॥१॥ (मुख को स्पर्श करें)
ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु ॥२॥ (दोनों नथनों को स्पर्श करें)
ओं अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ॥३॥ (दोनों आंखों को स्पर्श करें)
ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ॥४॥ (दोनों कानों को स्पर्श करें)
ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु ॥५॥ (दोनों भुजाओं को स्पर्श करें)
ओं ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु ॥६॥ (दोनों जंघाओं को स्पर्श करें)
ओं अरिष्टानि मे अंगानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ॥७॥
(सारे शरीर पर जल छिड़कें)

अंगस्पर्श के पश्चात् ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना मन्त्रों का पाठ करें—

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रं तन्न आसुव ॥१॥
हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥२॥
य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।
यस्य च्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥३॥
यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव ।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥४॥
येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः ।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥५॥
प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥६॥
स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥७॥

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ॥८॥

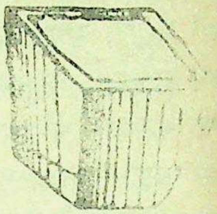

सम्मुख रखे यज्ञकुण्ड में समिधाओं का चयन करें और चम्मच में कपूर रखकर जलायें तथा—

ओ३म् भूर्भुवः स्वः ॥

गोभिल गृ॰ पू॰ १। खं॰ १ सूत्र ११ ॥

फिर अगले मन्त्र को बोलकर उस अग्नि को हवनकुण्ड में रख दें।

ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते
पृथिवी देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ॥१॥

निम्नलिखित मन्त्र से अग्नि को घृत तथा छोटी-छोटी समिधा रखकर प्रज्वलित करें।

ओं उद् बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सꣳसृजेथामयं च।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ॥

नीचे लिखे मन्त्रों से तीन समिधा घृत में भिगोकर तीन बार आहुतियां दें।

ओं अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध
वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय
स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे-इदं न मम ॥१॥

१इससे एक समिधा और

ओं समिधाग्निं दुवस्यत, घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन्
हव्या जुहोतन स्वाहा॥ इदमग्नये इदं न मम ॥२॥
सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन।
अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदं न मम।

(इन दोनों मन्त्रों से दूसरी समिधा)

ओं तंत्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि । बृहच्छोचा यविष्ठ्यस्वाहा । इदमग्नयेऽङ्गिरसे इदं न मम ॥४॥

(इससे तीसरी समिधा)

(निम्न मन्त्र से घी की पांच आहुतियां दें)

ओं अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ॥ इदमग्नये जातवेदसे इदं न मम ॥

अधोलिखित मन्त्रों से वेदी के चारों ओर मन्त्र के सामने दिये निर्देश के अनुरूप जल छिड़कें ।

ओं अदितेऽनुमन्यस्व ॥१॥ (इससे पूर्व दिशा में)

ओं अनुमतेऽनुमन्यस्व ॥२॥ (इससे पश्चिम में)

ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व ॥३॥ (इससे उत्तर में)

ओं देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय । दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ।४।

यजुर्वेद अ० ३० मं० १४ ॥ (इससे वेदी के चारों ओर जल छिड़कें)

आघारावाज्याहुति—निम्नलिखित मन्त्रों से दो घृताहुति दें ।

ओं अग्नये स्वाहा । इदमग्नये इदं न मम ।

(इस मन्त्र से यज्ञकुण्ड के उत्तर भाग में घृताहुति देवें ।)

ओं सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय इदं न मम ॥२॥

(इस मन्त्र से यज्ञकुण्ड के दक्षिण भाग में)

आज्यभागाहुति—इन मन्त्रों से यज्ञकुण्डके मध्यभाग में घृताहुति देवें

ओं प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये इदं न मम ॥१॥

ओं इन्द्राय स्वाहा । इदं इन्द्राय इदं न मम ॥२॥

॥ प्रातःकाल आहुति के मन्त्र ॥

ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥१॥

ओं सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥२॥

ओं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥३॥

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या जुषाणःसूर्यो वेतु स्वाहा ।

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा । इदमग्नये प्राणाय इदन्न मम ।
ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा । इदं वायवेऽपानाय इदन्न मम ॥
ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा । इदमादित्याय व्यानाय इदन्न मम । ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापान-व्यानेभ्यः स्वाहा ॥

इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः इदन्न मम ।

ओं आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ॥

ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते ।
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥

॥ सायंकाल आहुति के मन्त्र ॥

ओं अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥१॥

ओं अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥२॥

ओं अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥३॥

(इस मन्त्र को मन में बोलकर तीसरी आहुति)

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा ।

प्रातः सायं दोनों समय के मन्त्र

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा । इदमग्नये प्राणाय इदन्न मम ।

ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा । इदं वायवेऽपानाय इदन्न मम

ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा । इदमादित्याय व्यानाय इदन्न मम । ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा । इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः इदन्न मम ।

ओं आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा ॥

ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते ।

तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥

जो व्यक्ति प्रातःकाल व सायंकाल यज्ञ करते हैं, वे प्रातःकाल की आहुतियां प्रातः तथा सायंकाल की आहुतियां ही सायंकाल को दें, तदनन्तर पूर्णाहुति करें, किन्तु जो व्यक्ति दिन में एक बार ही यज्ञ करते हैं वे दोनों समय की आहुतियां उपरिलिखित क्रमानुसार दें, तदनन्तर आगे लिखे मन्त्रों से आहुति देकर पूर्णाहुति करें ।

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।

यद् भद्रं तन्न आसुव स्वाहा । य० अ० ३० । मं० ३ ॥

ओं अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् । युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा ।

निम्नलिखित मन्त्र को तीन बार बोलकर सभी अवशिष्ट हव्य की आहुति देवें ।

ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा ।

विशेष यज्ञ के लिये

स्वस्तिवाचन मन्त्र,ईश्वरस्तुति प्रार्थनोपासना मन्त्रों के पश्चात् बोलें।

स्वस्तिवाचन

ओं अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम् ॥१
स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव
सचस्वा नः स्वस्तये ॥२॥ ऋ० मं० १। सू० १। मं० १, ९॥
स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः।
स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना ॥३॥
स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः।
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः ॥४॥
विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये।
देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः ॥५॥
स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति।
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि ॥६॥
स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि ॥७॥

ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः।
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥८॥
येभ्यो माता मधुमत् पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः।
उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनुमदा स्वस्तये ॥९॥
नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद् देवासो अमृतत्वमानशुः।
ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये॥१०

सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिह्वृता दधिरे दिवि क्षयम् ।
ता आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्याँ अदितिं स्वस्तये॥११
को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यतिष्ठन ।
को वोऽध्वरं तुविजाता अरं करद्यो नः पर्षदत्यंहः स्वस्तये ॥१२॥
येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्त होतृभिः ।
त आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त सुपथा स्वस्तये॥१३॥
य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः ।
ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये ॥१४॥
भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेऽहोमुचं सुकृतं दैव्यं जनम् ।
अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये ॥१५॥
सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम् ।
दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये ॥१६॥
विश्वे यजत्रा अधिवोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिह्रुतः ।
सत्यया वो देवहूत्या हुवेम शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये ॥१७॥
अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघायतः ।
आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतनोरु णः शर्म यच्छता स्वस्तये ॥१८॥
अरिष्टः स मर्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि ।
यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये ॥१९॥
यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हिते धने ।
प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये ॥२०॥
स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्वति ।
स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन ॥२१॥
स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वत्यभि या वाममेति ।

सा नो अमा सो अरणे नि पातु स्वावेशा भवतु देवगोपा ॥२२॥

इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावती-रनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघशँ्सो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ॥२३॥ यजु० १ । १ ॥

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽअपरीतास उद्भिदः ।
देवा नो यथा सदमिद्वृधेऽसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ॥२४॥
देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाँ रातिरभि नो निवर्त्तताम् ।
देवानाँ सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥२५॥
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥२६॥
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥२७॥
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥२८॥
यजु० अ० २५ । मं० १४।१५।१८।१९।२१॥

अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये ।
नि होता सत्सि बर्हिषि ॥२९॥
त्वमग्ने यज्ञानाँ होता विश्वेषाँ हितः
देवेभिर्मानुषे जने ॥३०॥
साम० पूर्वा० प्रपा० १ । द० १ । मं० १, २ ॥

ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः ।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे ॥३१॥ अथर्व० कां १० ॥

अथ शान्तिप्रकरणम्

ओं शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या ।
शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ ॥१॥
शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः ।
शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु ॥२॥
शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः ।
शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु ॥३॥
शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम् ।
शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभिवातु वातः ॥४॥
शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु ।
शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः ॥५॥
शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः ।
शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टाग्नाभिरिह शृणोतु ॥६॥
शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः ।
शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः ॥७॥
शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु ।
शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः ॥८॥
शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः ।
शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः ॥९॥
शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः
शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः ॥१०॥
शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु ।
शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाःशं नो अप्याः

शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः ।
शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु ॥१२॥
शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः ।
शं नो अपां नपात् पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपाः ॥१३॥
इन्द्रो विश्वस्य राजति । शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥१४॥
शं नो वातः पवताँ शं नस्तपतु सूर्य्यः ।
शं नः कनिक्रदद् देवः पर्जन्यो अभि वर्षतु ॥१५॥
अहानि शं भवन्तु नः शँ रात्रीः प्रति धीयताम् ।
शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या ।
शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः ॥१६॥
शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शं योरभिस्रवन्तु नः॥१७॥
द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति-
रोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म
शान्तिः सर्वँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥१८॥
तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं
जीवेम शरदः शतँ शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः
शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥१९॥
यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति ।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२०॥
येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः ।
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२१॥
यत् प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु ।
यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥२२॥

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम् ।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२३॥
यस्मिन्नृचः साम यजूं षि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः
यस्मिंश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२४॥
सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव ।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२५॥
स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते ।
शं राजन्नोषधीभ्यः ॥२६॥ साम० उत्तरा० प्रपा० १ । मं० ३ ॥
अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे ।
अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु ॥२७॥
अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात् ।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ॥२८॥

❀ महा व्याहृत्याहुति मन्त्र ❀

ओं भूरग्नये स्वाहा । इदमग्नये इदन्न मम ॥१॥
ओं भुववायवे स्वाहा । इदं वायवे इदन्न मम ॥२॥
ओं स्वरादित्याय स्वाहा । इदमादित्याय इदन्न मम ॥३॥
ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा । इदमग्नि वाय्वादित्येभ्यः इदन्न मम ॥४॥

विशेषयज्ञों तथा संस्कारादियों में महाव्याहृति मन्त्र "ओं भूरग्नये स्वाहा" आदि चार मन्त्रों की आहुति देने के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से स्विष्टकृत् आहुति घृत अथवा भात की देनी चाहिए ।

ओं यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम् । अग्निष्टत् स्विष्टकृद्विद्यात्सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे । अग्नये स्विष्टकृते

सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्त हुतीनां कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा । इदमग्नये स्विष्टकृते इदन्न मम ॥

प्राजापत्याहुति नीचे लिखे मन्त्र को मन में बोलकर देनी चाहिए ।

ओं प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये इदन्न मम ॥

अब प्रधान होम सम्बन्धी चार आहुतियां घृत की इन मन्त्रों से देवें ।

ओं भूर्भुवः स्वः । अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः । आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा । इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम ॥१॥

ओं भूर्भुवः स्वः । अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः । तमीमहे महागयं स्वाहा । इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम ॥२॥

ओं भूर्भुवः स्वः । अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम् । दधद्रयिं मयिपोषं स्वाहा । इदमग्नयेपवमानाय इदन्न मम ॥

ओं भूर्भुवः स्वः । प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु, वयं स्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा । इदं प्रजापतये इदन्न मम ॥४॥

साधारण हवन तथा संस्कारों में विशेष-विशेष अवसर पर निम्नलिखित आठ आज्याहुति इन आठ मन्त्रों से दें ।

ओं त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽव यासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा । इदमग्नी वरुणाभ्यां इदन्न मम ॥१

ओं स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो-व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृडीकं सुहवो न एधि स्वाहा । इदमग्नीवरुणाभ्यां इदन्न मम ॥२॥

ओं इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामवस्युरा-चके स्वाहा । इदं वरुणाय इदन्न मम ॥३॥

ओं तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्रमोषीः स्वाहा । इदं वरुणाय इदन्न मम ॥४॥

ओं ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा । इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यः इदन्न मम ॥५॥

ओं अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमयासि । अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजꣳ स्वाहा । इदमग्नये अयसे इदन्न मम ॥६॥

ओं उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा ॥ इदं वरुणायाऽऽदित्यायादितये च इदन्न मम ॥७॥

ओं भवतन्नः समनसौ सचेतसावरेपसौ । मा यज्ञꣳ हिꣳसिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा । इदं जातवेदोभ्यां इदन्न मम ॥८॥

उपरिलिखित आठ मन्त्रों की आहुति देकर प्रातः एवं सायंकाल के मन्त्रों की आहुति देनी चाहिए और पूर्णाहुति तक पूर्वोक्त विधि को करें ।

पूर्णमासी की आहुतियां

ओं अग्नये स्वाहा ॥१॥ ओं अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा ॥२॥
ओं विष्णवे स्वाहा ॥३॥

अमावस्या की आहुतियां

ओं अग्नये स्वाहा ॥१॥ ओं इन्द्राग्नीभ्यां स्वाहा ॥२॥ ओं विष्णवे स्वाहा ॥३॥

पितृ यज्ञ

अग्निहोत्र की विधि पूर्ण करके तीसरा यज्ञ पितृयज्ञ करे अर्थात् जीवित माता-पिता आदि की यथावत् सेवा करे यही 'पितृयज्ञ' कहाता है।

बलिवैश्वदेव यज्ञ विधि

निम्नलिखित १० मन्त्रों से घृत के पात्र में शक्कर आदि मिला कर बलिवैश्वदेव यज्ञ के निमित्त आहुति दें :—

ओम् अग्नये स्वाहा ॥१॥ ओं सोमाय स्वाहा ॥२॥ ओम् अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा ॥३॥ ओं विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ॥४॥ ओं धन्वन्तरये स्वाहा ॥५॥ ओं कुह्वै स्वाहा ॥६॥ ओम् अनुमत्यै स्वाहा ॥७॥ ओं प्रजापतये स्वाहा ॥८॥ ओं द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा ॥९॥ ओं स्विष्टकृते स्वाहा ॥१०॥

तत्पश्चात् निम्नलिखित मन्त्रों से बलि का दान करें :—

ओं सानुगायेन्द्राय नमः। इससे पूर्व ॥ ओं सानुगाय यमाय नमः। इससे दक्षिण ॥ ओं सानुगाय वरुणाय नमः। इससे पश्चिम ॥ ओं सानुगाय सोमाय नमः। इससे उत्तर ॥ ओं मरुद्भ्यो नमः। इससे द्वार ॥ ओं अद्भ्यो नमः ॥ इससे जल ॥ ओं वनस्पतिभ्यो नमः। इससे मूसल और ऊखल ॥ ओं श्रियै नमः ॥ इससे ईशान ॥ ओं भद्रकाल्यै नमः। इससे नैर्ऋत्य ॥ ओं ब्रह्मपतये नमः। ओं वास्तुपतये नमः। इससे मध्य ॥ ओं विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ओं दिवाचरेभ्यो भूतेभ्यो नमः ॥ ओं नक्तंचारिभ्यो भूतेभ्यो नमः। इससे ऊपर ॥ ओं सर्वात्म भूतये नमः। इससे पृष्ठ ॥ ओं पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वाहा भ्यः नमः। इससे दक्षिण ॥

राष्ट्रीय प्रार्थना

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् । आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम् । दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम् । निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ (यजु० अ० २ मन्त्र २२)

"ब्रह्मन् ! स्वराष्ट्र में हों, द्विज ब्रह्मतेजधारी ।
क्षत्रिय महारथी हों, अरि-दल-विनाशकारी ॥
होवें दुधारु गौवें, वृष अश्व आशुवाही ।
आधार राष्ट्र की हो, नारी सुभग सदा ही ॥
बलवान् सभ्य योधा, यजमान-पुत्र होवें ।
इच्छानुसार वर्षें, पर्जन्य ताप धोवें ॥
फल-फूल से लदी हों, औषध अमोघ सारी ।
हो योग-क्षेमकारी, स्वाधीनता हमारी ॥"

हे जगदीश दयालु ब्रह्म प्रभो ! सुनिये विनय हमारी ।
हों ब्राह्मण उत्पन्न देश में धर्म कर्म व्रतधारी ॥
क्षत्रिय हों रणधीर महारथी धनुर्वेद अधिकारी ।
धेनु दूध वाली हों सुन्दर वृषभ तुंग बलधारी ॥
हों तुरंग गति चपल, अंगना हों स्वरूप गुण वाली ।
विजयरथी पुत्र हों जनपद के रत्न तेज बलशाली ॥
जब ही जब जग करे कामना जलधर जल बरसावें ।
फलें पकें वह सुखद वनस्पति, योगक्षेम सब पावें ॥

"द्विज वेद पढ़ें, सुविचार बढ़ें, बल पाय चढ़ें सब ऊपर को ।
अविरुद्ध रहें ऋजु पन्थ गहें, परिवार कहें वसुधा भर को ॥
ध्रुव धर्म धरें, पर दुःख हरें, तन त्याग तरें भवसागर को ।
दिन फेर पिता, वरदे सविता हम आर्य करें जगती भर को ॥"

यज्ञ प्रार्थना [१]

यज्ञ रूप प्रभो हमारे भाव उज्ज्वल कीजिये।
छोड़ देवें छल कपट को मानसिक बल दीजिये ॥१॥
वेद की बोलें ऋचाएं सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे शोक सागर से तरें ॥२॥
अश्वमेधादिक रचायें यज्ञ पर उपकार को।
धर्म मर्यादा चलाकर लाभ दें संसार को ॥३॥
नित्य श्रद्धा भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें।
रोग पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें ॥४॥
भावना मिट जाये मन से पाप अत्याचार की।
कामनायें पूर्ण होवें यज्ञ से नर-नारि की ॥५॥
लाभकारी हों हवन हर जीवधारी के लिये।
वायु जल सर्वत्र हों शुभ गन्ध को धारण किये ॥६॥
स्वार्थ भाव मिटे हमारा प्रेम पथ विस्तार हो।
इदन्न मम का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो ॥७॥
प्रेम रस में तृप्त होकर वन्दना हम कर रहे।
नाथ करुणा रूप करुणा आपकी सब पर रहे ॥८॥

यज्ञ महिमा (२)

होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से।
जल्दी प्रसन्न होते हैं भगवान् यज्ञ से॥
१—ऋषियों ने ऊंचा माना है यह स्थान यज्ञ का।
करते हैं दुनिया वाले सब सम्मान यज्ञ का॥
दर्जा है तीन लोक में—महान् यज्ञ का।
भगवान् का है यज्ञ और भगवान् यज्ञ का॥
जाता है देव लोक में इन्सान यज्ञ से। होता है—
२—करना हो यज्ञ प्रकट हो जाते हैं अग्नि देव।
डालो विहित पदार्थ शुद्ध खाते हैं अग्नि देव॥

सबको प्रसाद यज्ञ का पहुंचाते अग्नि देव
बादल बना के भूमि पर, बरसाते अग्नि देव ॥
बदले में एक के अनेक, दे जाते अग्नि देव ।
पैदा अनाज होता है—भगवान् यज्ञ से ॥
होता है सार्थक वेद का विज्ञान यज्ञ से । होता है...
२—शक्ति और तेज यश भरा इस शुद्ध नाम में ।
साक्षी यही है विश्व के हर नेक काम में ।
पूजा है इसको कृष्ण और भगवान् राम ने ।
होता है कन्यादान भी इस यज्ञ के सामने ।
मिलता है राज्य, कीर्ति और सन्तान यज्ञ से । होता है...
३—सुख शान्तिदायक मानते हैं सब मुनि इसे ।
वशिष्ठ, विश्वामित्र और नारद मुनि इसे ॥
इसका पुजारी कोई भी पराजित नहीं होता ।
भव यज्ञकर्ता को कभी किञ्चित् नहीं होता ॥
होती हैं सारी मुश्किलें आसान यज्ञ से । होता है...
४—चाहे अमीर है कोई चाहे गरीब है ।
जो नित्य यज्ञ करता है वह खुशनसीब है ॥
हम सब में आये यज्ञ के अर्थों की भावना ।
'जखमी' के सच्चे दिल से है यह श्रेष्ठ कामना ॥
होती हैं पूर्ण कामना—महान् यज्ञ से । होता है...

प्रभु भक्ति (१)

शरण प्रभु की आओ रे ! यही समय है प्यारे ।
आओ प्रभु गुण गाओ रे ! यही समय है प्यारे ।
उदय हुआ ओ३म् नाम का भानु, आओ दर्शन पाओ रे ॥१॥
अमृत झरना झरता झर-झर, इसे पी के अमर हो जाओ रे ॥२॥
छल कपट और झूठ को त्यागो, सत्य में चित्त लगाओ रे ॥३॥

हरि की भक्ति बिन नहीं मुक्ति, दृढ़ विश्वास जमाओ रे ।।७।।
करलो नाम प्रभु का सुमिरन, अन्त को ना पछताओ रे ।।८।।
छोटे-बड़े सब मिलके खुशी से, गुण ईश्वर के गाओ रे ।।९।।

भजन (४)

ओ३म् अनेक बार बोल, प्रेम के प्रयोगी । ध्रुव ।।
है वही अनादि नाद निर्विकल्प निर्विवाद ।
भूलते न पूज्यपाद, वीतराग योगी ।। ओं अनेक—
वेद को प्रमाण मान, अर्थ योजना बखान ।
गा रहे गुणी सुजान, साधु स्वर्ग भोगी ।। ओं अनेक—
ध्यान में धरें विरक्त, भाव से भजें सुभक्त ।
त्यागते अघी अशक्त, शुष्क पाप रोगी ।। ओं अनेक—
शंकरादि नित्य नाम, जो जपे विसार काम ।
तो बने विवेक धाम, मुक्ति क्यों न होगी ।। ओं अनेक—

भजन (५)

मुझे वेद धर्म से हे पिता, सदा इस तरह का प्यार है ।
कि न मोड़ूं मुंह उससे मैं, कोई चाहे सिर भी उतार दे ।।
वह कलेजा राम को जो दिया, वह जिगर जो बुद्ध को मला किया
वह फराख दिल दयानन्द का, घड़ी भर मुझे भी उधार दे ।।
न हो दुश्मनों से मुझे गिला, करूं मैं बदी की जगह भला ।
मेरे दिल से निकले सदा दुआ, कोई कष्ट चाहे हजार दे ।।
नहीं मुझे ख्वाहिशे मर्तबा, न है मालोजर की हविस मुझे ।
मेरी उम्र खिदमते खल्क में, परमात्मा तू गुजार दे ।।
मुझे प्राणिमात्र के वास्ते, करो सोजे दिल वह अता पिता ।
रहूं उनके गम में मैं इस तरह, कि न खाक तक भी गुबार दे ।।
मेरी ऐसी जिन्दगी हो बसर, कि हूं सुर्खरू तेरे सामने ।
न कहीं मुझे मेरा आत्मा ही, यह धर्म जैसा विचार दे ।।

न किसी का मर्तबा देखकर, जले दिल में नारे हसद कभी ।
वहीं पर रहूं, रहूं शान्त मैं, मुझे ऐसा सब्रो करार है ॥
लगे ज़ख्म दिल पै अगर किसी के, तो मेरे दिल में तड़प उठे
मुझे ऐसा दे दिले दर्द बस, है 'प्रेम' की यह कामना ॥
यही एक उसकी है आरजू कि वह चन्द रोज़ा हयात को,
तेरी याद ही में गुजार दे ॥

विनय (६)

शरण अपनी में रख लीजे दयामय दास हूं तेरा ।
तुझे तज कर कहां जाऊं, हितैषी कौन है मेरा ॥
भटकता हूं मैं मुद्दत से नहीं विश्राम पाता हूं ।
दया की दृष्टि से देखो, नहीं तो डूबता बेड़ा ॥
सताया राग द्वेषों का, तपाया तीन तापों का ।
दुखाया जन्म मृत्यु का, हुआ तंग हाल है मेरा ॥
दुखों को मेटने वाला, तुम्हारा नाम सुन कर मैं ।
शरण में आ गिरा अब तो, भरोसा नाथ है तेरा ॥
क्षमा अपराध कर मेरे, फकत अब आश है तेरी ।
दया 'बलदेव' पर करके, बनाले नाथ निज चेरा ॥

भजन (७)

चंचल मन मत कर कुटिलाई ।
बीते जन्म अनेकों मूरख, अजहु समझ न आई ॥
परम पुनीत वेद पथ तजकर, औघट घाट नहाई ॥
चंचल मन मत कर कुटिलाई ॥
अर्थ धर्म अरु काम मोक्ष फल हैं चारों सुखदाई ।
अधकचरे तोरे कारत हैं, निपट विलख अन्याई ॥
चंचल मन मत कर कुटिलाई ॥
श्वान समान भ्रमता डोले; घर-घर याचत जाई ।

कहा होवेगा कि कीचड़ में, वा पर बहुत बड़ाई ॥
चंचल मन मत कर कुटिलाई ॥
जो सुख चाहत है 'केवल' की मान सीख सुखदाई ।
तज अवगुण गठरी सिर से कर ले कछु नेक कमाई ॥
चंचल मन मत कर कुटिलाई ॥

भजन (८)

हे प्रेमधर प्रभो तुम्हीं सबके आधार हो ।
तुमको परम पिता प्रणाम बार बार हो ॥
ऐसी कृपा करो कि हम सब धर्मवीर हों ।
वैदिक पवित्र धर्म का जग में प्रचार हो ॥
उपदेश देश देश में वेदों का दें सुना ।
समभाव और प्रेम का सब में प्रसार हो ॥
असहाय के सहाय हों उपकार हम करें ।
अभिमान से बचें, हृदय विशाल उदार हो ॥
फूले फले संसार में यह रम्य वाटिका ।
कर्त्तव्य का अपने सदा हमको विचार हो ॥
स्वाधीनता के मन्त्र का जप हम सदा करें ।
सेवा में मातृभूमि की तन मन निसार हो ॥

भजन ९

आज मिल सब गीत गाओ उस प्रभु के धन्यवाद ।
जिसका यश नित गाते हैं गन्धर्व मुनिजन धन्यवाद ॥
मन्दिरों में कन्दरों में पर्वतों के शिखर पर ।
देते हैं लगातार सौ-सौ बार मुनिवर धन्यवाद ॥
करते हैं जंगल में मंगल पक्षिगण हर शाख पर ।
पाते हैं आनन्द मिल गाते हैं स्वर भर धन्यवाद ॥
कूप में, तालाब में, सागर की गहरी धार में ।
प्रेम रस में तृप्त हो करते हैं जलचर धन्यवाद ॥

शादियों में कीर्तनों में यज्ञ और उत्सव के आदि ।
मीठे स्वर से चाहिये करें नारी नर सब धन्यवाद ॥
गानकर 'अमीचन्द' भजनानन्द ईश्वर की स्तुति ।
ध्यान धर सुनते हैं श्रोता कान धर-धर धन्यवाद ॥

ओ३म् ध्वज गान (१०)

जयति ओ३म् ध्वज व्योम बिहारी ।
विश्व प्रेम प्रतिमा अति प्यारी ॥

सत्व सुधा बरसाने वाला, स्नेहलता सरसाने वाला ।
सौम्य सुमन विकसाने वाला, विश्व विमोहक भवभयहारी ॥
इसके नीचे बढ़ें अभय मन, सत्पथ पर सब धर्म धुरी जन
वैदिक रवि का हो शुभ उदयन, आलोकित होवें दिशि सारी ॥
इससे सारे क्लेश शमन हो, दुर्मति दानव द्वेष दमन हों ।
अति उज्ज्वल अति पावन मन हों, प्रेम तरंग बहें सुखकारी ॥
इसी ध्वजा के नीचे आकर, ऊँच-नीच का भेद भुलाकर ।
मिले विश्व मुद मंगल गाकर पन्थाई पाखण्ड बिसारी ॥
इसी ध्वजा को लेकर कर में, भर दें वेद ज्ञान घर-घर में ।
सुभग शांति फैले जग भर में, मिटे अविद्या की अन्धियारी ॥
विश्व प्रेम का पाठ पढ़ावें, सत्य अहिंसा को अपनावें ।
जग में जीवन ज्योति जगावें, त्याग पूर्ण हो वृत्ति हमारी ॥
आर्य जाति का सुयश अक्षय हो, आर्य ध्वजा की अविचल जय हो ।
आर्य जनों का ध्रुव निश्चय हो, आर्य बनावें वसुधा सारी ॥

भजन (११)

हे दयामय हम सबों को शुद्धताई दीजिये ।
दूर करके हर बुराई को भलाई दीजिये ॥ टेक ॥
कीजिये ऐसा अनुग्रह हम पै हे परमात्मा ।
हों सभासद इस सभा के सबके सब धर्मात्मा ॥ १ ॥
हों उजाला सबके मन में ज्ञान के प्रकाश से ।
और अन्धेरा दुर सारा हो अविद्या नाश से ॥ २ ॥

खोटे कर्मों से बचें और तेरे गुण गावें सभी।
छूट जावें दुःख सारे सुख सदा पावें सभी॥ ३॥
सारी विद्याओं को सीखें, ज्ञान से भरपूर हों।
शुभ कर्म में होवें तत्पर दुष्ट गुण सब दूर हों॥ ४॥
यज्ञ हवन से हो सुगन्धित अपना भारतवर्ष देश।
वायु जल सुखदायी होवें जाय मिट सारे क्लेश॥ ५॥
वेद के प्रचार में होवें सभी पुरुषार्थी।
होवे आपस में सुप्रीति और बनें परमार्थी॥ ६॥
लोभी,कामी और क्रोधी कोई भी हम में न हो।
सर्व व्यसनों से बचें और छोड़ देवें मोह को॥ ७॥
अच्छी संगत में रहें और वेद मारग पर चलें।
तेरे ही होवें उपासक और कुकर्मों से बचें॥ ८॥
कीजिये हम सबका हृदय शुद्ध अपने ज्ञान से।
मान भक्तों में बढ़ाओ अपने भक्ति दान से॥९॥

भजन (१२)

पितु मातु सहायक स्वामी सखा, तुम ही इक नाथ हमारे हो।
जिनके कछु और अधार नहीं, तिनके तुम ही रखवारे हो॥
सब भाँति सदा सुखदायक हो, दुःख दुर्गुण नाशनहारे हो।
प्रतिपाल करो सिगरे जग को, अतिशय करुणा उर धारे हो॥
भूलि हैं हम ही तुमको तुम तो, हमरी सुधि नाहिं बिसारे हो।
उपकारन को कछु अन्त नहीं, छिन ही छिन जो विस्तारे हो॥
महाराज महा महिमा तुम्हरी, समुझे बिरले बुधवारे हो।
शुभ शान्ति-निकेतन प्रेमनिधे, मन—मन्दिर के उजियारे हो॥
यही जीवन के तुम जीवन हो, इन प्राणन के तुम प्यारे हो।
तुम सों प्रभु पाय 'प्रताप हरि, केहि के अब और सहारे हो॥

भजन (१३)

प्रेमी बन कर प्रेम में ईश्वर के गुण गाया कर।
मन मन्दिर में गाफिला झाड़ू रोज लगाया कर॥ प्रेमी॥

भजन (१३)

उठ जाग मुसाफिर भोर भई अब रैन कहां जो सोवत है।
जो जागत है सो पावत है, जो सोवत है सो खोवत है॥
टुक नींद से अंखियां खोल जरा और अपने प्रभु से ध्यान लगा।
यह प्रीत करन की रीत नहीं प्रभु जागत है तू सोवत है॥
जो कल करना सो आज कर ले जो आज करना सो अब कर ले।
जब चिड़ियों ने चुग खेत लिया फिर पछताये क्या होवत है॥
नादान भुगत करनी अपनी अब पापी पाप में चैन कहां।
जब पाप की गठरी सीस धरी फिर सीस पकड़ क्यों रोवत है॥

आरती

ओ३म् जय जगदीश हरे, पिता जय जगदीश हरे।
भक्त जनन के संकट, क्षण में दूर करे॥१॥
जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनशे मन का।
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का॥२॥
मात पिता तुम मेरे, शरण गहूं मैं किस की।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं जिसकी॥३॥
तुम पूरण परमातमा, तुम अन्तरयामी।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी॥४॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्त्ता।
मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्त्ता॥५॥
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति।
किस विध मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति॥६॥
दीनबन्धु दुःखहर्त्ता, तुम रक्षक मेरे।
करुणाहस्त बढ़ाओ, शरण पड़ा मेरे॥७॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा॥८॥

आर्यसमाज के नियम

१—सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

२—ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है।

३—वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४—सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

५—सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहियें।

६—संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७—सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।

८—अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

९—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

१०—सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

सार्वदेशिक प्रेस, नई दिल्ली-२